3

मसीह, मूसा से श्रेष्ठ
(3:1--19)

यहूदी लोग नबियों में (1:1) और व्यवस्था में जो स्वर्गदूतों के द्वारा दी गई थी (2:2) घमण्ड करते थे। उनका मानना था कि उन्हें सबसे बड़ा व्यवस्था का देने वाला, मूसा दिया गया था। मूसा के बाद उनके विश्वास के प्रबन्ध में सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी महायाजक ही होता था।

इस पत्री का उद्देश्य यहूदी संतों को यहूदीवाद में वापस जाने से रोकना था। उनके मन में नबियों, व्यवस्था और मूसा के लिए बहुत श्रद्धा थी। इस कारण लेखक के लिए यह दिखाना आवश्यक था कि मसीह, मूसा और पहले महायाजक हारून से भी बड़ा है। जिस कारण इब्रानियों 3:1—4:13 मसीह के मूसा से श्रेष्ठ होने की बात करता है।

मसीह, प्रेरित और महायाजक (3:1-6)

3:1-6

[1]इसलिए हे पवित्र भाइयो तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो। [2]वह अपने नियुक्त करने वाले के लिए विश्वासयोग्य था, जैसा मूसा भी परमेश्वर के सारे घर में था। [3]क्योंकि यीशु मूसा से इतना बढ़कर महिमा के योग्य समझा गया है, जितना कि घर का बनाने वाला घर से बढ़कर आदर रखता है। [4]क्योंकि हर एक घर का कोई न कोई बनाने वाला होता है, पर जिसने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर है। [5]मूसा तो परमेश्वर के सारे घर में सेवक के समान विश्वासयोग्य रहा, कि जिन बातों का वर्णन होने वाला था, उनकी गवाही दे। [6]परन्तु मसीह पुत्र के समान परमेश्वर के घर का अधिकारी है, और उसका घर हम हैं, यदि हम साहस पर, और अपनी आशा के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।

आयतें 1 और 2 में लेखक की चर्चा की मुख्य बात को बताता एक और शोध है। मूसा सचमुच में नबी और मध्यस्थ था। उसने यहां तक कि भविष्यद्वाणी की थी कि उसकी जगह एक और नबी लेगा (व्यवस्थाविवरण 18:15-18)। इस नये "मूसा" और नये "प्रेरित और महायाजक" ने जैसा कि 2:17 में बताया गया है, "नयापन जो आ चुका था" दिया। स्पष्टतया नई वाचा में यीशु के पास वे भूमिकाएं हैं जो पुरानी वाचा में मूसा और हारून दोनों के पास अलग-अलग थीं।[1]

आयत 1. हे पवित्र भाइयो वाक्यांश का इस्तेमाल नये नियम में केवल यहीं हुआ

है।[2] कुलुस्सियों 1:2 में पौलुस ने ऐसे ही वाक्यांश में ''विश्वासी भाइयो'' का इस्तेमाल किया, परन्तु ''पवित्र भाइयो'' विलक्षण है। हमें ''भाइयों'' से मसीह के साथ अपने सम्बन्ध के कारण ''पवित्र'' होने की उम्मीद करनी चाहिए (गलातियों 3:26, 27)। ''पवित्र'' और ''संत'' यूनानी भाषा में एक ही मूल शब्द के अनुवाद हैं जिसमें *hagios* संज्ञा और *hagiazō* क्रिया शब्द है। इस शब्द का अर्थ ''अलग किया हुआ,'' परमेश्वर को समर्पित है। लेखक पुराने नियम में ''पवित्र जाति'' की अवधारणा का स्पष्ट हवाला दे रहा था (निर्गमन 19:6; 1 पतरस 2:9)। ''पवित्र लोगो'' पदनाम का इस्तेमाल पुराने नियम में आठ बार हुआ है। व्यवस्थाविवरण 7:6 में हम इसे पहली बार देखते हैं और दानिय्येल 12:7 में हमें यह अन्तिम बार मिलता है। मसीही लोग सचमुच में ''परमेश्वर के पवित्र'' अर्थात अलग किए हुए लोग (*hagioi*) हैं।

हम **स्वर्गीय बुलाहट में भागी** हैं, जो तब बनते हैं जब हम मसीह को ग्रहण करके उसमें बढ़ने लगते हैं जिसमें ''परमेश्वर ने (हमें) मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है'' (फिलिप्पियों 3:14)। यहां के अलावा ''बुलाहट'' शब्द का इस्तेमाल पौलुस द्वारा आठ बार और पतरस द्वारा एक बार किया गया था; नये नियम में हमें और यह कहीं नहीं मिलता है। हमारी बुलाहट ''स्वर्गीय'' है। विशेषण शब्द ''स्वर्गीय'' इब्रानियों की पुस्तक में छह बार मिलता है (6:4; 8:5; 9:23; 11:16; 12:22)। इसे हमारी ''बुलाहट'' के लिए इस्तेमाल किया गया है क्योंकि यह हमें ''स्वर्गीय यरूशलेम'' (12:22) और स्वर्गीय नगर (11:16) में ले जाता है जैसे अब्राहम की बुलाहट उसे ले गई।

नाम **यीशु** का उल्लेख इब्रानियों 3:1 में दूसरी बार हुआ है। उसका नाम लेखक के लिए मुख्य शब्द था। इसी लिए यह पत्र में चौदह बार मिलता है। यहां इसका होना इब्रानियों के उसके मनुष्य होने के पहले पर ज़ोर देने पर मिल सकता है ताकि उन्हें पूरी तरह से पता चले कि वह शरीर में उन में से एक था।

प्रेरित के लिए यूनानी शब्द *apostolos* का अर्थ ''भेजा हुआ'' है। नये नियम में विशेषकर इसका इस्तेमाल ''परमेश्वर के राजदूतों के रूप में एक विशेष काम देकर अति सम्मानित विश्वासियों के एक समूह'' को कहा गया है।[3] नये नियम में इस शब्द का इस्तेमाल चाहे कई बार हुआ है पर कहीं भी मसीह को ''प्रेरित'' नहीं कहा गया है।

क्रिया शब्द *apostellō* आम तौर पर यीशु के लिए लागू होता है। यह एक सामान्य शब्द है जो नये नियम में एक सौ से अधिक बार मिलता है। *Apostellō* का मसीह के लिए पहली बार इस्तेमाल मत्ती 15:24 में हुआ है।

मूसा और यीशु दोनों को परमेश्वर द्वारा विशेष मिशनों पर भेजा गया था (निर्गमन 3:10), जिसके कारण दोनों को ही परमेश्वर के प्रेरित कहा गया है।[4] सुसमाचार का यूहन्ना का विवरण इस बात पर ज़ोर देता है कि यूहन्ना डुबकी देने वाले और यीशु को परमेश्वर द्वारा ''भेजा'' गया था (3:34; 5:24, 36, 37; 6:29; 10:36; 11:42; 17:3; 1 यूहन्ना 4:10 भी देखें)। प्रेरितों को मसीह द्वारा वैसे ही भेजा गया था जैसे मसीह को परमेश्वर द्वारा भेजा गया था (यूहन्ना 17:18; 20:21)।

''प्रेरित'' शब्द का मूल अर्थ ''दूत'' है। यीशु वास्तव में परमेश्वर की ओर से हमारे लिए दूत था। *Apostolos* को 2 कुरिन्थियों 8:23 और फिलिप्पियों 2:25 में कलीसियाओं के दूतों

के लिए इस्तेमाल किया गया है। शब्द का विचार एक ''राजदूत'' का है जो किसी सरकार का प्रतिनिधित्व करता है और उसे उसके लिए कार्य करने का अधिकार होता है। मूल विचार ''मिशनरी'' शब्द में पाए जाने वाले शब्द से मिलता है जिसे किसी मिशन के साथ भेजा गया हो। साहित्यिक यूनानी ज्ञाषा में इस शब्द का इस्तेमाल युद्ध में जाने के लिए सेना के लिए या सेना के सेनापति के लिए किया जाता था।

नये नियम में इस शब्द का पहली बार इस्तेमाल बारह चेलों के लिए हुआ (मत्ती 10:2–5), परन्तु इसका इस्तेमाल कलीसिया द्वारा चुने गए दूतों या मिशनरियों के लिए भी हुआ, जैसे बरनबास (प्रेरितों 14:4, 14)। यह शब्द अपने आप में ''जिसे अधिकार दिया गया है'' का विचार लेता है।

बारहों को पूरा अधिकार देने की बात तब आई जब प्रेरितों 2:1–4 में पवित्र आत्मा की सामर्थ उन पर दी गई। इस कारण उन्हें पवित्र आत्मा की राह देखने की आज्ञा दी गई (लूका 24:49; प्रेरितों 1:8)। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के बाद, आश्चर्यकर्म करने की इसकी शक्तियों के साथ वे पूरी तरह से प्रचार करने के योग्य हो गए थे। उनका अधिकार अन्तिम और सम्पूर्ण रूप में यरूशलेम और कलीसिया के ऊपर दिखाई दिया था जैसा कि हनन्याह और सफीरा की मृत्यु के बारे में पढ़ने के द्वारा पता चलता है (प्रेरितों 5:1–11)। वह चौंकाने वाली घटना तब हुई जब धन प्रेरितों के पास लाया जा रहा था। अन्य आश्चर्यकर्मों के साथ इस घटना (प्रेरितों 5:12) से कुछ लोगों के मन में डर बैठ गया, यहां तक कि वे प्रेरितों के साथ नज़दीकी बनाने से भी बचने लगे। परन्तु इस भय ने (5:13) कलीसिया की उन्नति में हस्तक्षेप नहीं किया (5:14)। इसके विपरीत हमें यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि प्रेरितों और उनके अधिकार के लिए सचमुच का आदर कलीसिया की वास्तविक उन्नति के लिए आवश्यक है।

आज कोई नया प्रेरित नहीं है क्योंकि आज भी प्रेरणा के द्वारा किए गए अपने वचनों में वे पूरे अधिकार के साथ हमारे साथ साथ रहते हैं। प्रेरितों को दी गई सहायता की प्रतिज्ञा उन्हें आत्मा के द्वारा दी जानी थी, जैसा कि यूहन्ना 14—17 में बताया गया है। कुछ लोग दावा करते हैं कि वे प्रतिज्ञाएं (सत्य के प्रकाशन पाना, वे सब बातें याद करना जो यीशु ने बताईं थीं, और भविष्य की घटनाओं का ज्ञान पाना; यूहन्ना 14:26; 16:13) आज हमारे लिए भी हैं। परन्तु स्पष्ट रूप में आज मसीही लोगों के लिए ऐसी शक्तियों की प्रतिज्ञा नहीं की गई है। यदि की गई होती तो हम पवित्र शास्त्र के नये परिशिष्ठ लिख सकते थे।

यीशु परमेश्वर के इच्छा पूरी करने और यीशु की नई सभा, कलीसिया को बनाने के लिए मनुष्यों के लिए उसका ''दूत'' है। यह काम उसने प्रेरितों के द्वारा किया, जिन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरणा दी गई। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए वह मूसा या किसी भी और से बड़ा प्रेरित है।

प्रेरित ने हमारे **अंगीकार** की बात की। ''अंगीकार'' (*homologia*) विश्वास की मिली–जुली बात के लिए कहा गया हो सकता है। पुरानी वाचा के अधीन इस शब्द का अर्थ व्यवस्था के प्रति निष्ठा दिखाना था (निर्गमन 24:3; LXX) नई वाचा के अधीन हम ''अच्छे अंगीकार'' को जिसे तीमुथियुस ने ''बहुत से गवाहों के सामने'' किया था, मानते हैं (1 तीमुथियुस 6:12)। पौलुस ने ''अंगीकार'' को पिलातुस के सामने यीशु द्वारा मानने के साथ मिलाया (1 तीमुथियुस 6:13)। इस काफ़िर हाकिम के सामने प्रभु ने कहा कि वह राजा है और उसका राज्य सच्चाई

के आत्मिक इलाके में है (यूहन्ना 18:36, 37)। गवाही देने के लिए जैसे तीमुथियुस ने दी, ''अंगीकार'' करना आवश्यक है, जिसमें यीशु को अंगीकार करने वाल जीवन के प्रभु के रूप में माना जाए। यह कहने का कि ''मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है'' (प्रेरितों 8:37)। अर्थ इस तथ्य को मान लेना है। यह ''यीशु प्रभु [है]'' (रोमियों 10:9, 10)। कहने जैसा ही है। सच्चे मन से ऐसी बात कहने का अर्थ ''अच्छा अंगीकार'' करना है; इस सच्चाई को ठुकराने का अर्थ मसीह का इनकार करना है, जो उसके द्वारा हमारे इनकार का कारण बनेगा (मत्ती 10:32, 33)।

''अंगीकार'' के लिए यही शब्द 1 तीमुथियुस 6:12 में भी मिलता है परन्तु यहां पर इसके साथ उपपद है और इसका अनुवाद अंग्रेज़ी भाषा में ''द गुड कन्फैशन'' किया गया है। जब हम मसीह को अपने प्रभु के रूप में मान लेते हैं तो वह हमारा **महायाजक** बन जाता है। मसीह में मनपरिवर्तन को ''अंगीकार'' कहा जाता है क्योंकि मसीही जीवन आरम्भ करने में यह आवश्यक कदम है। 1 तीमुथियुस 6:12, 13 और मत्ती 16:16–18 ''अच्छा अंगीकार'' किए जाने के उदाहरण देते हैं। रोमियों के नाम अपने पत्र में पौलुस ने कहा कि उद्धार पाने के लिए ऐसा मानना आवश्यक है (10:9, 10)। हमें यीशु को प्रभु, अर्थात परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचानना आवश्यक है। यदि कोई केवल विश्वास के द्वारा उद्धार पा सकता तो अंगीकार की कोई आवश्यकता नहीं होनी थी।

मत्ती 10:32 वाला ''अंगीकार'' एक निरन्तर क्रिया है, इस कारण यह केवल सुसमाचार के आज्ञापालन में किए जाने वाले विश्वास की बात ही नहीं है। हर मसीही के लिए ''अंगीकार'' वाले जीवन के द्वारा प्रतिदिन यह दिखाते रहना आवश्यक है कि वह परमेश्वर की संतान है। इब्रानियों 4:14 और 10:23 के पढ़कर ध्यान में मसीह को प्रभु मानने और मानते रहने के काम की दोनों बातें आती हैं। 2 कुरिन्थियों 9:13 ''मानकर अधीन'' रहने की बात करता है जिसका अर्थ यह है कि हमारा जीवन उससे मेल खाता होना आवश्यक है जिस विश्वास का हम दावा करते हैं। मकिदुनिया के लोगों ने यही किया था (2 कुरिन्थियों 8:1–5), और कुरिन्थियों को ज़रूरतमंदों को उदारता से देकर ऐसा करने का आग्रह किया गया था।

आयत 2. NASB और हिन्दी अनुवाद (अनुवादक) में कहा गया है कि यीशु **विश्वासयोग्य था**; परन्तु मूल यूनानी भाषा में वर्तमान काल का इस्तेमाल हुआ है, जिसका अर्थ है ''यीशु विश्वासयोग्य है।'' ''विश्वासयोग्य'' एक और मुख्य शब्द है जिसका इस्तेमाल इब्रानियों में छह बार और पौलुस के लेखों में पैंतीस बार हुआ है। यहूदी रब्बी गिनती 12:7 को **मूसा** की वफ़ादारी के प्रमाण के रूप में उद्धृत करते थे (LXX)।[5] वह विश्वासयोग्य था, तब भी जब इस्राएलियों द्वारा जो मिस्र में लौट जाना चाहते थे, सोने के बछड़े के मामले में हारून बहक गया था (निर्गमन 32:1–20)।

यीशु का **घर** परमेश्वर का परिवार है और इसे कलीसिया के रूप में वर्णित किया गया है जिस पर मसीह राज करता है (1 तीमुथियुस 3:15)। मूसा के सम्बन्ध में, ''घर'' यहूदी युग को कहा गया है। मूसा ने इसे बनाने के लिए परमेश्वर के निर्देशों का पालन किया।

तो फिर इन दो आयतों में प्रमुख विचार क्या है? निश्चय ही विचार यह है कि चूंकि यीशु परमेश्वर का प्रेरित, हमारे अंगीकार का महायाजक है और उसके प्रति जिसने उसे ठहराया

विश्वासयोग्य था, निष्कर्ष यह निकलता है कि वह मूसा से बड़ा प्रेरित है।

आयतें 3, 4. मसीह **मूसा से बढ़कर महिमा के योग्य है** (आयत 3)। **घर का बनाने वाला घर** के नौकर से **बढ़कर आदर रखता है**। माइकलेंजलो (1475–1564) सिस्टाइन चैपल की छत पर की गई अपनी सुन्दर कला से बढ़कर आदर के योग्य है। ''आधुनिक खगोलविद्या के पितामह'' गलीलियो उस दूरबीन से अधिक आदर के योग्य है जिसका इस्तेमाल वह अपने निष्कर्ष निकालने में करता था।

मसीह उसक घर को कैसे बना सकता था जिसका सदस्य मूसा था, क्योंकि उसका तो मूसा की मृत्यु के 1,500 साल बाद तक जन्म नहीं हुआ था? मसीह के अनादि होने का इब्रानियों की पुस्तक में यह एक और स्पष्ट संकेत है। ऐसा उसने पिता के साथ अपने काम के भाग के रूप में किया, जब वह अपने देहधारी होने से पहले अनन्तकाल में उसके साथ सह-अस्तित्व में था। इस तथ्य का संकेत इब्रानियों 1:2 में दिया गया है और यूहन्ना 1:1–3 में स्पष्ट बताया गया है। इब्रानियों 13:8 यह कहते हुए कि ''यीशु मसीह कल और आज और युगानयुग एक सा है'' एक बड़े निष्कर्ष पर पहुंचता है।

लेखक मूसा को कम नहीं कर रहा था। उसने इस बड़े पुरखे की वफ़ादारी को स्वीकार किया, परन्तु उसने दिखाया कि यीशु उस ''घर का बनाने वाला'' था जिसमें मूसा केवल एक सेवक था। मूसा परमेश्वर के पुराने नियम के परिवार में विश्वासयोग्य सेवक था (गिनती 12:7)। वह जैसा कि महासभा के सामने अपने उपदेश में स्तिफनुस ने बताया, ''जंगल में कलीसिया के बीच'' था (प्रेरितों 7:38)।

अपने घर अर्थात कलीसिया के बनाने वाले के रूप में (मत्ती 16:18) यीशु घर से और इसके किसी भी सेवक से बड़ा है। तस्वीर बनाने वाला, मूर्ति बनाने वाला, या बिल्डिंग का डिज़ाइन बनाने वाला किए जाने वाले काम से अधिक आदर के योग्य होता है।

यीशु के ''घर'' बनाने का विचार स्पष्टतया जकर्याह 6:12, 13 से लिया गया है। परमेश्वर ने वचन दिया कि दाऊद का पुत्र उसके घर को बनाएगा: ''मेरे लिए एक घर वही बनाएगा, और मैं उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूंगा'' (1 इतिहास 17:12)। इस प्रकार पुराने नियम के ''घर'' और नये नियम के ''घर'' को एक करने की बात लगती है क्योंकि हर युग के परमेश्वर के धर्मी संत उस घर में मिलते हैं। इब्रानियों 12:23 में इस सच्चाई पर ज़ोर दिया गया है, जहां ''सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं'' का हवाला उन सब लोगों के लिए होना चाहिए, जो अब तक जीवित रहे हैं।

आयतें 5, 6. मूसा विश्वासयोग्य रहा परन्तु वह केवल **सेवक** था[6] जबकि यीशु **घर का अधिकारी** है। इसी प्रकार से मूसा का ''घर'' मसीह द्वारा बनाए गए घर से घटिया था। मूसा का घर मसीह के घर ''वास्तविक'' (प्रतिरूप) की परछाई (रूप) था। कुलुस्सियों 2:17 और इब्रानियों 10:1 इसी विचार को बताते हैं।

मूसा की व्यवस्था ने इस्राएल के धार्मिक और नागरिक सरकार के नियमों का काम किया। 1 तीमुथियुस 1:9 संकेत देता है कि व्यवस्था दुष्टों और पापियों के लिए बनाई गई थी; यह उनके पाप को दिखाने के लिए थी और जीवन और आचरण के लिए और उदार प्रबन्ध की आवश्यकता को दिखाती थी (गलातियों 3:19; रोमियों 7:7)। यह मसीह के आने तक पाप और

मूर्तिपूजा के विश्वव्यापी फैलाव को अनैतिकता के इसके सहयोगी के साथ रोकने के लिए थी (गलातियों 3:19)।

इसके अलावा पुरानी वाचा का मुख्य डिज़ाइन मसीह की कलीसिया के रूप को तैयार करना था (देखें इब्रानियों 8:4, 5)। मसीह ने केवल अपने घर का अधिकारी नहीं होना था, बल्कि उसने अपने नये आत्मिक घर का बनाने वाला भी होना था (मत्ती 16:18; 1 पतरस 2:5, 9)। मूसा परमेश्वर की हर आज्ञा को मानने में वफ़ादार था कि पुराने नियम के प्रबन्ध की हर बात क्रमबद्ध हो ताकि यह पूरी तरह से कलीसिया का सिद्ध रूप हो।

लेखक ने आगे कहा **उसका घर हम हैं**। हम असली "इस्राएली" हैं, जब हम आज्ञा मानकर अपने लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा को मानते हैं। गलातियों 3:26–29 और 6:16 दिखाते हैं कि मसीह में बपतिस्मा लेने वाला व्यक्ति, विश्वास के द्वारा मसीह का भाग और अब्राहम के "वंश" का भाग बन जाता है।

हम नये नियम का इस्राएल हैं। **यदि हम साहस और अपनी आशा के घमण्ड तक अन्त तक दृढ़ता में स्थिर रहें**। यह ताड़ना पाठकों को विश्वास से हटने से रोकने की एक और चेतावनी है (3:12, 13)। केवल मसीह के वचन में बने रहकर ही हम उसके असली चेले बन सकते हैं (यूहन्ना 8:31)। हमारी आशा "निडर भरोसे" पर है (MSG)। ऐसा "साहस" (*parrēsia*) होने का अर्थ "किसी बात में या की महिमा" होना है। "घमण्ड" के लिए शब्द *kauchēma* का अर्थ "साहसिक उमंग" हो सकता है जिसमें प्रभु में आराधना से भरा साहस हो।[7] मसीही लोग जिन्हें यह पत्र लिखा गया था प्रभु में अपनी पक्की आशा को खोने के खतरे में थे।[8]

निश्चय ही जीवन के पूरा हो जाने पर हमें अनन्त जीवन की वास्तविकता मिलेगी, न केवल इसकी प्रतिज्ञा, "यदि हम" अपने विश्वास में "अन्त तक दृढ़ता से स्थिर" रहें। प्रभु के घर का भाग होने के लिए हमें इसके सच्चे सेवक बने रहना आवश्यक है। हम मसीह में सुरक्षित हैं परन्तु सुरक्षित हम अपने आज्ञाकारी विश्वास से ही होते हैं (1 पतरस 1:4, 5)।

विश्वास हमारी ओर से किया गया आज्ञापालन का कार्य है न कि परमेश्वर की ओर से दिया गया दान। इफिसियों 2:8 में बताया गया "दान" विश्वास नहीं बल्कि उद्धार है, जैसा कि रोमियों 6:23 भी इसकी पुष्टि करता है। बाइबल के सतर्क पाठक इस पर ध्यान देंगे कि KJV, NKJV और NASB में इफिसियों 2:8 वाला "यह" तिरछा किया गया है, जिसका अर्थ यह है कि यह शब्द मूल धर्मशास्त्र में नहीं था। कुछ संस्करणों में यह प्रभाव छोड़ा जाता है कि "दान" विश्वास है, जिसकी अनुमति यूनानी भाषा नहीं देगी। विश्वास परमेश्वर के प्रकाशन के द्वारा हमें दिया गया परोक्ष दान है (रोमियों 10:17)। उसने उद्धार का एक प्रबन्ध बनाया है जिसमें हमारा विश्वास हमें लेकर आता है। पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन अपने सुनने वालों को बताया था कि उन्हें अपने आपको बचाना आवश्यक था (प्रेरितों 2:40; KJV)। इसके अलावा पौलुस ने कहा कि हमें "अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा" करना आवश्यक है (फिलिप्पियों 2:12)। निश्चय ही हमारे उद्धार का परमेश्वर का योगदान आरम्भ करने और बनाए रखने वाला है। आज्ञापालन में हमारा कोई भी काम वास्तव में हमारे छुटकारे को कमाता या हमें इसके योग्य नहीं बनाता है। इसके बावजूद विश्वास के कार्य आवयश्क हैं। विश्वास अपने आप में एक "काम" है, जिसे

परमेश्वर ने हमारे करने के लिए ठहराया है (यूहन्ना 6:29)।

क्या हम उचित ढंग से "अपनी आशा के घमण्ड" को पकड़े रख सकते हैं जैसा कि 3:6 में कहा गया है? NRSV में है "यदि हम भरोसे में और उस घमण्ड में जो आशा का है बने रहें।" अनुवादित संज्ञा शब्द "साहस" का अर्थ है "स्पष्टवादी," "निर्भयता" "स्पष्टता," और "भरोसा।" क्या राज्य में घमण्ड के लिए कोई स्थान है? लगता है, परन्तु इस घमण्ड का काम क्या है? यह राज्य के काम के लिए जोश हो सकता है जब हमें मालूम है कि हम ने अपने विश्वास को दृढ़ता से और दिलेरी से थामा हुआ है। प्रभु में और जो कुछ वह हमारे लिए करता है उसमें घमण्ड हमारी अपनी प्राप्तियों के लिए बड़े हुए मान के बिना हो सकता है।

हमारी आशा और घमण्ड यीशु में है। हमारा स्वयं प्राप्त किया हुआ आत्मिकता में घमण्ड हमें उस फरीसी के साथ मिला देगा जिसके घमण्ड ने उसकी प्रार्थना को मन्दिर की छत से ऊपर न जाने दिया (लूका 18:10-14)। ऐसा घमण्ड "विनाश से पहिले" होता है (नीतिवचन 16:18)। इस पत्री के प्राप्तकर्त्ताओं का सही किसम की आशा और घमण्ड करना आवश्यक था क्योंकि वे अपनी आशा में अपने भरोसे को खो रहे थे।

हमारे घमण्ड का आधार हमारी आशा में है जो मूसा और व्यवस्था द्वारा दी जाने वाली किसी भी बात से उत्तम है। इस कारण घमण्डी यहूदियों और रब्बियों द्वारा की जाने वाली एक और अलोचना स्पष्ट रूप में कम हो जाती है क्योंकि इस्राएल की आशा मूसा में नहीं थी। "उत्तम आशा" इब्रानियों 7:18, 19 में बताई गई है, और नई वाचा में मिलती है "जिसके द्वारा हम परमेश्वर के समीप" आते हैं।

यीशु सचमुच में मूसा से उत्तम है। वह बड़ा प्रेरित, बड़ा बनाने वाला, और पुत्र है न कि सेवक। न केवल वह मूसा से बड़ा था, बल्कि वह हारून से भी बड़ा था, जो महायाजक था। यीशु ने सनातन घर को बनाया और इसमें महायाजक के रूप में काम किया!

मसीह का विश्राम (3:7—4:13)

कठोर मन के विरुद्ध चेतावनी (3:7-19)

वचन का प्रमाण (3:7-11)

7अतः जैसा पवित्र आत्मा कहता है,

"यदि आज तुम उसका शब्द सुनो।
8तो अपने मन को कठोर न करो,
जैसा कि क्रोध दिलाने के समय और परीक्षा के दिन जंगल में किया गया था।
9जहां तुम्हारे बाप-दादों ने मुझे जांचकर परखा
और चालीस वर्ष तक मेरे काम देखे।
10इस कारण मैं उस समय के लोगों से रूठा रहा,

और कहा, इनके मन सदा भटकते रहते हैं,
और इन्होंने मेरे मार्गों को नहीं पहचाना।
[11]तब मैंने क्रोध में आकर शपथ खाई,
कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाएंगे।''

जो कुछ हम ने 3:1-6 में देखा है उसको ध्यान में रखते हुए उसमें एक समानता बनाई जा सकती है: परमेश्वर की नई वाचा के लोगों के रूप में हम पुरानी वाचा के लोगों की तरह हैं, जो प्रतिज्ञा किए हुए अपने देश की ओर बढ़ते हुए अपने जंगल में से आगे बढ़ रहे हैं। मसीह जो कि मूसा से बढ़कर है, हमारा अगुआ है और हम प्रतिज्ञा किए हुए उस देश में उसके पीछे जा रहे हैं जो उससे उत्तम है, जो पुरानी वाचा में दिया गया था।[9] इस प्रकार पुराने नियम के लोगों की चेतावनी नये नियम के लोगों के लिए भी उसी प्रकार से लागू होती है।

अपने पाठकों को लेखक की ताड़ना को स्वाभाविक रूप में ''अत:'' शब्द से विभाजित किया जा सकता है। यह शब्द दो बार (आयतें 7, 10 में) आता है और तीसरी बार इसका संकेत मिलता है (आयत 11)।

आयत 7. जैसा पवित्र आत्मा कहता है वाक्यांश यह पता देता है है कि हमारा लेखक भजन संहिता 95 को सीधे परमेश्वर की प्रेरणा से दिया हुआ मानता था, चाहे वह LXX अनुवाद से ही उद्धृत कर रहा था। इसके अलावा ''कहता है'' शब्द वर्तमान काल में है, जो संकेत देता है कि परमेश्वर आज भी पवित्र शास्त्र के द्वारा वैसे ही बात कर रहा है जैसे तब करता था। सम्पूर्ण बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा दिए हुए लेखकों के द्वारा मनुष्यजाति के साथ परमेश्वर का बातें करना ही है (2 पतरस 1:20, 21)। इस कारण पाप और विश्वासत्याग (बेदीनी) के विरुद्ध पुराने नियम की चेतावनियां हमारे भी उन चेतावनियों की तरह ही हैं, जो केवल नये नियम में मिलतीं है।

लेखक ने भजन संहिता 95:7-11 से उद्धृत किया है। ये आयतें दोनों घटनाओं को जंगल में इस्राएलियों की कहानी से मिला देती है। एक जगह इस्राएली पानी की तंगी से परेशान थे और मूसा के विरुद्ध बुड़बुड़ा रहे थे (निर्गमन 17:1-7)। बाद में कनान के बारे में जासूसों की बुरी रिपोर्ट के कारण कइयों ने प्रतिज्ञा किए हुए देश पर तुरन्त हमला करने से इनकार कर दिया (गिनती 13:25—14:4)। दोनों ही घटनाओं से जंगल में घूमने के दौरान इस्राएल के विश्वास की कमी का पता चलता है; दोनों घटनाएं परमेश्वर में भरोसे की कमी से निकली थीं। परमेश्वर के लोग होने का दावा करना एक बात है परन्तु आपके लिए जो उसे अच्छा लगता है वह देने के लिए उसमें भरोसा रखना दूसरी बात है।

आयतें 8-10. परमेश्वर **क्रोध** में आ गया, परन्तु वह दुखी होने से कहीं बढ़कर था; वास्तव में वह उस पीढ़ी से ''चिड़'' गया था।[10] रेमंड ब्राउन के अनुसार परमेश्वर ''उस पीढ़ी से तंग आ गया था।''[11] उसकी नाराज़गी सही थी क्योंकि लोग उन पर उसके अनुग्रह के बावजूद उसकी आज्ञा तोड़ते जा रहे थे। निश्चय ही आज विद्रोह में **चालीस वर्ष** बिताने वाला व्यक्ति भी परमेश्वर को क्रोध ही दिलाता है। हमें भी वैसी ही चेतावनी की आवश्यकता है जैसी इस्राएलियों को दी गई थी। हम भी परमेश्वर को वैसे ही दुखी कर सकते हैं जैसे उन्होंने किया था।

हमें इस मामले पर जल्द ध्यान देना आवश्यक है। परमेश्वर कहीं पर भी हमें एक और दिन होने का आश्वासन नहीं देता है, सो हमारा कर्त्तव्य **आज** ही पूरा होना आवश्यक है। यह सच है, चाहे यह सुसमाचार के हमारे आरम्भिक आज्ञापालन की बात हो (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38) या विश्वासयोग्यता में निरन्तर बढ़ते रहने की आवश्यकता के लिए (2 पतरस 1:5–11) हो।

इब्रानियों की पुस्तक के आरम्भिक लेखकों को दूर हो जाने का गम्भीर खतरा था और उन्हें विशेष ताड़ना की आवश्यकता थी। उन्हें यह मिली और बताया गया कि "**अपने मन को कठोर न करो ...**" (आयत 8)। सुसमाचार के उपदेशों को ठुकराकर हम भी अपने मनों को कठोर कर सकते हैं। उन लोगों पर सबसे अधिक अफ़सोस है जो जानबूझकर परमेश्वर के वचन का सामना करने के लिए अपने मनों को कठोर कर लेते हैं।

लेखक ने लिखा, "**जैसा कि क्रोध दिलाने के समय और परीक्षा के समय जंगल में किया था**" (आयत 8)। NASB में है "जैसा जब उन्होंने मुझे क्रोध दिलाया था, जंगल में परीक्षा के दिन की तरह।" यह उदाहरण उन घटनाओं की ओर संकेत करती है जो मरीबा में घटी थीं। भजन जिसमें से यह उद्धृत किया गया है, वास्तव में कहता है, "अपना अपना सदय ऐसा कठोर मत करो, जैसा मरीबा में, वा मस्सा के दिन जंगल में हुआ था" (भजन संहिता 95:8)। मरीबा वह स्थान था जहां पर पानी की कमी होने पर इस्राएली बुड़बुड़ाए थे (निर्गमन 17:1–7)। निर्गमन 17:7 में इसी स्थान के लिए "मरीबा" और "मस्सा" शब्दों का इस्तेमाल हुआ।

इन नामों के अनुवाद देते हुए इब्रानियों के लेखक ने LXX की शब्दावली की नकल की। उसने लगातार LXX का इस्तेमाल किया चाहे कई बार उसने इसके वाक्यांश का इस्तेमाल किया हो सकता है। भजन संहिता 95:8 के इब्रानी शास्त्र का मूल अर्थ है, "अपने मन को कठोर न करो, जैसे मरीबा में, जैसे मस्सा के दिन जंगल में।" LXX में लिखा है, "अपने मनों को कठोर न करो, जैसे *क्रोध दिलाने* में, जंगल में *चिड़ाने* के दिन के अनुसार।" "क्रोध दिलाने," या "विद्रोह" का अनुवाद "मरीबा" के समार्नाथक यूनानी शब्द (*parapikrasmos*) से अनुवाद किया गया है।[12] इस स्थान के लिए और नाम "मस्सा" जिसका अर्थ "झगड़ा" है "परीक्षा" के लिए यूनानी शब्द (*peirasmos*) के बराबर है।

लेखक ने कहा कि इस्राएलियों ने अपनी शिकायत से परमेश्वर के धीरज की **परीक्षा** ली थी (आयत 9)। मिस्र में आश्चर्यकर्मों को देखने के बाद, चट्टान में से पानी के बहने के अद्भुत उपहार को देखने के बाद, जंगल में बटेर और मन्ना के परमेश्वर के अनुग्रहकारी उपाय के मिलने के बाद और बादल और आग के खम्मे से परमेश्वर द्वारा अगुआई किए जाने के बाद वे ऐसा व्यवहार कैसे दिखा सकते थे? हम भी परमेश्वर की दया के कामों को देखकर उदासीनता और विद्रोह के द्वारा उसके धीरज की परीक्षा करके उसे दुखी कर सकते हैं।

"चालीस वर्ष" (आयत 9) दण्ड की अवधि थी जो परमेश्वर ने ठहराई थी। यह वह समय था जिसमें परमेश्वर ने इस्राएल को जंगल में रोककर घूमने के लिए विवश करके प्रतिज्ञा किए हुए देश की यात्रा लम्बी कर दी थी। क्या "चालीस वर्ष" के इस उल्लेख में मसीहा की भविष्यद्वाणी का कोई संकेत हो सकता है? इस्राएलियों के विश्वास की अपनी कमी के कारण जंगल में घूमने का यह समय सम्भवतया यीशु के ठुकराए जाने और क्रूस पर चढ़ाए जाने तथा यहूदी जाति के विनाश के बीच की समय अवधि से मेल खाता है।

यरूशलेम का विनाश और बहुतों का घात 70ईस्वी में हुआ। इब्रानियों के लेखक ने संकेत दिया कि पुराना प्रबन्ध मिट जाने के कगार पर था (देखें 8:13)। फिर मन्दिर नहीं रहना था और बलिदान भी बंद हो जाने थे। बेशक लेखक को मत्ती 24, मरकुस 13 और लूका 21 में प्रभु की भविष्यद्वाणियों से अगुआई मिली थी। हम केवल अनुमान लगा सकते हैं कि बाद की (अलिखित) भविष्यद्वाणियां इस आने वाले विनाश के सम्बन्ध में पवित्र लोगों के लिए दी गई थीं।

''इन्होंने मेरे मार्गों को नहीं पहचाना'' (आयत 10) यहोवा ने कहा। उन्होंने परमेश्वर की ईश्वरीय सामर्थ को बार बार देखा था। परन्तु उन्होंने उसके ''मार्गों'' को समझा नहीं (देखें यशायाह 55:9)। वास्तविकता में उन्होंने इस स्पष्ट सच्चाई को जानना नहीं चुना कि परमेश्वर की दृष्टि में विश्वास की कमी, सक्रिय भरोसा रखने वाले विश्वास की कमी कितनी घृणित है। अब्राहम ने जहां बिना ''देखे'' देख लिया था (इब्रानियों 11:13) वहीं इन लोगों ने परमेश्वर के सामर्थ को देखा था पर उन्होंने अपनी पवित्रता और शुद्ध किए जाने के लिए परमेश्वर की इच्छा को समझने के अर्थ में नहीं ''देखा'' था। होशे ने परमेश्वर के ज्ञान की कमी के कारण इस्राएलियों के पापों के लिए फटकारा था और इसके कारण उनके विनाश का वचन दिया था (होशे 4:1-6)।

आयत 11. यहां ''अत:'' शब्द इस्तेमाल नहीं हुआ है, परन्तु इसका संकेत है। हम कह सकते हैं, ''इसलिए, परमेश्वर ने 'शपथ खाई।' '' उसने **क्रोध में आकर शपथ खाई** कि इस्राएली कनान के **विश्राम में प्रवेश करने न** पाएंगे (देखें गिनती 14:22-30)। परमेश्वर अपने क्रोध में निष्पक्ष हो सकता है, क्योंकि यह स्वभाव का क्रोध नहीं है। बल्कि न्यायिक क्रोध है। उसके उनके पाप के कारण दण्ड देने के कारण हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि उसका न्याय सच्चा, निष्पक्ष और धार्मिकता के उसके ईश्वरीय मानक के अनुसार था। उसने उन्हें उनके पाप के परिणामों पर ज़ोर देने के लिए उन से ''शपथ खाई'' कि वे उसके विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे।

परमेश्वर इस्राएलियों के विद्रोह से नाराज़ था, उसकी नाराज़गी स्पष्टतया जंगल में उनके घूमने के पूरे चालीस वर्ष तक रही।[13] कोई भी व्यक्ति या जाति विद्रोह में रहने पर जबकि उन्हें पाप से बचने का अवसर मिला हो, उन्हें दण्ड देने के लिए परमेश्वर पर आरोप नहीं लगा सकता। मिस्र की दासता में लौट जाने की इस्राएलियों की इच्छा मूर्खतापूर्ण थे क्योंकि उन्हें जंगल में परमेश्वर की सेवा करने की पूरी छूट थी। यदि अब्राहम की संतान की तरह हम परमेश्वर के निर्देश के प्रति अपने मनों को कठोर कर लें तो हम उसके क्रोध को भड़काएंगे और उसके न्याय का सामना करेंगे।

इस्राएल की असफलता का कारण (3:12-19)

[12]हे भाइयो, चौकस रहो, कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न हो, जो जीवते परमेश्वर से दूर हटा ले जाए। [13]वरन जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक-दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए। [14]क्योंकि हम मसीह के भागीदार हुए हैं, यदि हम अपने प्रथम भरोसे पर

अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें। [15]जैसा कहा जाता है,

''कि यदि आज तुम उसका शब्द सुनो,
तो अपने मनों को कठोर न करो,
जैसा कि क्रोध दिलाने के समय किया था।''

[16]भला किन लोगों ने सुनकर क्रोध दिलाया? क्या उन सब ने नहीं, जो मूसा के द्वारा मिस्र से निकाले गए थे? [17]और वह चालीस वर्ष तक किन लोगों से क्रोधित रहा? क्या उन्हीं से नहीं, जिन्होंने पाप किया, और उनके शव जंगल में पड़े रहे? [18]और उसने किन से शपथ खाई, कि तुम मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाओगे: केवल उनसे जिन्होंने आज्ञा न मानी? [19]अत: हम देखते हैं कि वे अविश्वास के कारण प्रवेश न कर सके।

उपदेश को जारी रखते हुए लेखक ने इन मसीही लोगों से अपने विश्वास को मज़बूत और तगड़ा बनाए रखने को कहा। उसने चेतावनी दी कि विश्वास की नाकामी बर्बादी का कारण बन सकती है।

3:12-19 में उसके सारे संदेश को चार छोटे छोटे उपदेशों में बांटा जा सकता है। वह अपने पाठकों को पाप के खतरे से बचने के लिए आग्रह कर रहा, प्रोत्साहित कर रहा और विश्वास दिला रहा था।

आयत 12. पहले उसने कहा, **चौकस रहो** (*blepō*)। ''सचेत'' या ''सतर्क'' रहने का अग्रह (NKJV) यह दिखाता है कि यह पत्र धर्मशास्त्रीय लेख से बढ़कर है; यह एक ताकीदी प्रवचन है। दिया गया डॉक्ट्रिन का हर विषय ताड़ना के साथ संतुलित किया गया है। यहां पर अवश्यमाननीय रूप उसके आदेश को निर्णायक होने को दिखाता है।

पवित्र आत्मा ने भजन संहिता 95:7-11 (जैसा इब्रानियों 3:7-11 में उद्धृत) जासूसों के लौटने पर जिन्होंने प्रतिज्ञा किए हुए देश को देखा था, कादेश बर्ने की घटनाओं की बात की (गिनती 14:28-30)। इस घटना में हम आज अपने लिए ध्यान देने और लागू करने के लिए कई चेतावनियों को देखते हैं। पहली तो यह कि मसीही लोग विश्वासत्याग (बेदीनी) के खतरे में हैं यानी हम अनुग्रह से गिर सकते हैं। दूसरी यह कि यह खतरा अविश्वास से बढ़ता है। अविश्वास में जाना केवल कुछ तथ्यों को मानसिक रूप में नकारने से नहीं होता। स्पष्टतया हो सकता है कि कोई विश्वास में बना रहने के बावजूद विश्वासत्याग (बेदीनी) से बचने के लिए इतना मज़बूत न हो।

इब्रानियों में ''विश्वास'' का अर्थ परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का पूर होने के लिए आशापूर्वक राह देखना है (11:13)। विश्वास दबाव में ''पीछे'' नहीं हटेगा (देखें 10:38)। इसमें मन की भावनाएं और सच्चाई को समझदारी से स्वीकार करना शामिल है (11:1)। आयत 12 में बताया गया अविश्वास विश्वास को जानबूझकर न मानना है।[14]

अविश्वास कठोर मन का कारण बनता है। नये नियम में **मन** में विचारों, इच्छा, भावनात्मक भावनाओं सहित मन या बुद्धि शामिल है (देखें मत्ती 22:34-40)। 3:1 में मन की चौकसी

करने की लेखक की अपील ''यीशु पर ध्यान करने'' या उस पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यक बुलाहट से हुई।

अविश्वास का कारण **बुरा** मन ही होता है। अविश्वासी व्यक्ति केवल खराब ही नहीं है बल्कि ''बुरा'' (*ponēros*) है। वह बुरा करना चाहता है इस कारण उसका मन पाप से बीमार है और उसमें अविश्वास बढ़ता जाता है। पापी के रूप में जन्म लेने और मूल पाप में आरम्भ हुए जन्म के कारण गिरावट की ओर बढ़ते रहने के कारण नहीं है। कैल्विनवाद की शिक्षा है, ''मनुष्य पाप करता है क्योंकि वह पापी जन्मा था।'' आयत 12 यह घोषणा करती है कि व्यक्ति अपने अविश्वास के कारण बुराई को चुनता है और, और बुरा बन जाता है क्योंकि वह अ विश्वास के व्यवहार में बना रहता है।

हमें अपने साथ ऐसा न होने देने के लिए ''चौकस'' रहने की चेतावनी दी गई है। हम अविश्वासी नहीं जन्मे थे, जो अपनी सहायता नहीं कर सकते हैं। मसीही लोग भी यदि सावधान नहीं है तो वह इस निराशा में बढ़ सकते हैं और उनका मन ऐसा हो सकता है जो **जीवते परमेश्वर से दूर हटा ले जाए।** रोमियों 11:20, 23 में इसी यूनानी शब्द का अनुवाद ''हटा ले'' का इस्तेमाल हुआ है जहां पौलुस ने इस्राएलियों के विश्वासत्याग (बेदीनी) और विश्वास करने से इनकार की बात की।

आयत 13. दूर हटने के विनाशकारी परिणाम से बचने के लिए मसीही लोगों को हर दिन **एक दूसरे को समझाते** रहना आवश्यक है। यह आयत इब्रानियों 10:25 पर टीका का काम करती है। वहां पर दिए गए प्रोत्साहन की चर्चा उन लोगों द्वारा जो दूर हो सकते हैं प्रतिदिन करनी आवश्यक है, परन्तु यह हम सब के लिए भी लाभदायक है। हमें जब भी अवसर मिले एक दूसरे को प्रोत्साहित करना चाहिए, क्योंकि इससे विश्वासयोग्य बने रहने में एक दूसरे को सहायता मिलती है। जैसा कि हम देखेंगे, 10:25 का अर्थ ''और अधिक इकट्ठा होने के लिए प्रोत्साहित'' करने के बजाय ''और अधिक प्रोत्साहित करने के लिए इकट्ठा'' होना है।

खतरा और तेज़ होने के कारण और प्रोत्साहन दिया जाना आवश्यक है। इसकी आवश्यकता पर ज़ोर **जिस दिन आज का दिन कहा जाता है,** से दिया गया है। किसी आत्मा का भविष्य इस पर निर्भर हो सकता है कि आप ने आज क्या किया है। विश्वास से बाहर यहूदियों की ओर से यहूदी मसीही लोगों पर दबाव उन्हें खींच रहा हो सकता है जिससे वे मसीह को छोड़कर फिर से यहूदी मत की सेवा में जाने के प्रलोभन में पड़ रहे होंगे।

जैसा कि गलातियों 6:1, 2 पौलुस ने आग्रह किया है हम ''एक दूसरे का भार उठाएं और इस प्रकार से मसीह की व्यवस्था को पूरा करें।'' याकूब ने हमें याद दिलाया है कि किसी भटके हुए भाई को वापस लाकर हम वास्तव में ''उसके प्राण को मृत्यु से बचाते'' हैं (याकूब 5:19, 20), जिसका बहुत हद तक अर्थ उसे कब्र से शारीरिक जीवन से बचाना नहीं है। बल्कि लेखक अनन्त हानि वाले मृत्यु की बात कर रहा था। यदि हम इस प्रकार से सहायता नहीं कर पाते तो मसीह में एक भाई **पाप के छल में आकर कठोर** हो सकता है।

पाप धोखेबाज है क्योंकि यह आनन्द देने वाला होने की आड़ में आता है। पाप में उससे बढ़कर वचन देने की क्षमता है, जो यह दे सकता है। यह पूरी तरह से शराबी, नशेड़ी या एक आम आनन्द के खोजी में देखा जाता है जो अपनी उन गतिविधियों के परिणामों को ध्यान से

विचार करने के लिए समय नहीं देता है। मसीह के बाहर सदा रहने वाला आनन्द कोई नहीं हो सकता। पाप की मज़दूरी न केवल मृत्यु है बल्कि उन आदतों के आदी हो जाना भी है जिनमें कोई फंसा होता है।

आयत 12 में बताया गया खतरा "जीवते परमेश्वर" से दूर हो जाने का है। मसीह और उसके प्रेरितों द्वारा जिन नियमों की पैरवी की गई, उन्हें छोड़ देने का अर्थ केवल मसीह को छोड़ना ही नहीं, बल्कि परमेश्वर से दूर होना भी है। इसलिए मसीह में किसी का जीवन भक्तिपूर्ण जीवन शैली की शर्तों के बारे में उसके विश्वास से जुड़ा हुआ है। जो लोग "कामुकता" में "कठोर" हो जाते हैं उनके लिए पौलुस ने कहा, "तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई" (इफिसियों 4:19, 20)। जब कोई "मसीह की शिक्षा" पाता है तो उसे पता चलता है कि जीना कैसे है और अपने आपको कामुकता के लिए खाली नहीं करता है, जो कि इफिसियों 4 के संदर्भ से स्पष्ट है। इस प्रकार मसीह के विषय में जो हमें पता चलता है वह इस बात को तय करता है कि हमारा जीवन कैसा हो।

कुछ लोगों ने कहा है, "महत्वपूर्ण यह नहीं कि आप क्या करते हैं, बल्कि यह है कि मसीह के साथ आपका सम्बन्ध कैसा है"; "जब तक यीशु के साथ आपका व्यक्तिगत सम्बन्ध है, आपके कामों से कोई फर्क नहीं पड़ता"; या "महत्व इस बात का नहीं कि आप क्या करते हैं बल्कि इसका है कि आप क्या हैं।" जो कुछ हम करते हैं वह उसका जो हमारे मनों में है ज़दर्बस्त संकेत है, जैसे हमारी बोलचाल से पता चलता है कि हम वास्तव में कैसे व्यक्ति हैं। इससे पता चल जाता है कि हमें "हर बात का लेखा" क्यों देना पड़ेगा (मत्ती 12:36, 37)। हमारे वचन पाठ से पता चलता है कि हम जो कुछ करते हैं, वही होते हैं; यदि हम वह करते हैं जो मसीह के विपरीत है तो हम ने उसे त्याग दिया है और जीविते परमेश्वर से दूर हो गए हैं। कोई अपने आपको उससे जो वह करता है अलग नहीं कर सकता। इस प्रकार की काल्पनिक सोच चतुराई भरी लगती है परन्तु इसमें बाइबल का कोई सार नहीं है। हम जीने के ढंग की उसकी शिक्षाओं को जानने से "मसीह को जानने" (2 कुरिन्थियों 5:16) को अलग नहीं कर सकते।

इब्रानियों में यहां तक दो चेतावनियां देखी गई हैं। पहली, हम ने दूर जाने के खतरे को देखा है जो उदासीनता का सुझाव देता है (2:1-4)। दूसरा खतरा विश्वास की कमी और उसके बाद आज्ञा न मानने का है (3:12, 13)।[15] इब्रानियों के पूर्वजों ने पहले विरोध की अति कर दी थी और परमेश्वर की सामर्थ को नज़रअन्दाज़ किया था जो उन्हें स्पष्ट रूप में उपलब्ध करवाई गई। ऐसा करके उन्होंने प्रतिज्ञा किए हुए प्रतिफल को खो दिया था। विश्वास की उनकी कमी ने उन्हें आज्ञा न मानने वाले बना दिया था जो उनके विनाश का कारण बना।

आयतें 14, 15. मसीह के भागीदार (आयत 14) होने के कारण हम वास्तव में मसीह "में साझी" (NIV; RSV; ESV) हैं या अपने विश्वास को थामे रखकर उसके "साझेदार" (NRSV; ISV) बन जाते हैं। पवित्र लोगों के रूप में बपतिस्मे में उसके साथ एक होकर उद्धारकर्त्ता के साथ हमें आत्मिक रूप में एक किया गया है (रोमियों 6:3)। हम मसीह के राज्य जिसे हिलाया नहीं जा सकता, की बड़ी आशिषों में उसके साथ साझी बन जाते हैं (इब्रानियों 12:28)। यदि हम इस लक्ष्य को पा लेते हैं तो हम 1 कुरिन्थियों 1:10 में बताई गई आज्ञा के अनुसार वही बातें बोलेंगे और आत्मिक रूप में एक होंगे।

प्रेरितों के लिए और हमारे लिए अपनी प्रार्थना में यीशु ने मसीही लोगों के लिए "हम में" अर्थात परमेश्वर और मसीह में एक होने के लक्ष्य को बताया (यूहन्ना 17:20, 21)। बहुत से लोग यह मान लेते हैं कि धार्मिक जगत की फूट यह साबित करती है कि पवित्र शास्त्र को समझने का कलीसिया का तरीका गलत है। वह इस विचार की वकालत करते हैं कि हमें डॉक्ट्रिन के मतभेदों को एक ओर करके यानी "छोटी मोटी बातों" को नज़रअन्दाज़ करके एक हो जाना चाहिए। क्या यीशु ने अपनी प्रार्थना में ऐसी ही एकता की कल्पना की थी? फूट आम तौर पर बाइबल में जोड़ने के कारण होती है। केवल बाइबल के आधार पर हम एक हो सकते हैं और पूरी तरह से मसीह के साथ साझी हो सकते हैं।

हम आज भी परीक्षा की स्थिति में हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि अन्त में हमें वह सब मिल जाएगा, जो "मसीह के भागीदार" होने वालों के लिए है, हमें **दृढ़ता से स्थिर** रहना आवश्यक है। पौलुस ने आश्वासन दिया कि सुसमाचार उन्हें बचाता है जो इसमें बने रहते, इसे थामे रहते और जिन्होंने व्यर्थ विश्वास नहीं किया है (1 कुरिन्थियों 15:1, 2)। "व्यर्थ" विश्वास करने का अर्थ यह होगा कि कोई अपने विश्वास को छोड़ देता है या अन्त तक इसमें बना नहीं रहता है। जब हम उपेक्षा या आज्ञा न मानने के द्वारा मसीह के साथ अपनी एकता को खो सकते हैं (देखें 2:1; 3:12, 13)। हमें "दृढ़ता से स्थिर" रहना आवश्यक है नहीं तो हम अपने मुकुट को खो देंगे (प्रकाशितवाक्य 3:11), जिसका अर्थ यह है कि कोई हमारे मुकुट को छीन सकता है।

हमें किस बात में "दृढ़ता से स्थिर" रहना है? यह केवल धर्म को मानना ही है–कोई धर्म को मानने वाला होने का दिखावा कर सकता है जबकि वास्तव में वह धर्मी न हो। यह किसी पक्ष या डर के लिए जोश नहीं है। कोई फरीसी की तरह ऐसा जोश दिखा सकता है, जो केवल अपनी पदवी की चिंता करता हो और मसीह और उसकी कलीसिया की भलाई की नहीं। यह केवल ईमानदारी नहीं है जो कि हो सकता है कि कोई कारोबारी कारणों से ईमानदार हो पर प्रभु के लिए उसका कोई समर्पण न हो। न्याय के दिन कुछ लोग प्रभु के साथ बहस करने की कोशिश कर सकते हैं क्योंकि वह अपने झूठे विश्वासों में गम्भीर थे जो उन्हें परमेश्वर की इच्छा को न मानने का कारण बने तब वह उन से कह देगा, "मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना" (मत्ती 7:21–23)।

मसीही लोगों के लिए परमेश्वर के साथ सहभागिता में और सावधानी से दिए गए बाइबल अध्ययन में परमेश्वर और मसीह के प्रेम में बने रहकर अपने हृदयों की वापसी करना आवश्यक है। हमें अपने स्वभाव को काबू में रखकर आराधना सेवाओं में लगातार बना रहना चाहिए। हमें भीतरी मनुष्य से जुड़े कर्त्तव्यों में बना रहना आवश्यक है। परन्तु सार्वजनिक कर्त्तव्यों में भी बने रहना आवश्यक है। हमें सांसारिकता, अनैतिकता और बेईमानी से बचना सिखाया गया है। जैसे लम्बा या छोटा व्यक्ति नहीं हो सकता वैसे ही सांसारिक मसीही जैसी कोई बात नहीं हो सकती। कोई "गुप्त चेला" हो सकता है जैसे अरमित्तिया का यूसुफ़ था (यूहन्ना 19:38), परन्तु वह गुप्त होना अधिक देर के लिए नहीं हो सकता।

हमारा बने रहना तब तक होना आवश्यक है जिसे "आज" कहा जाता है (आयत 13), जिसका अर्थ यह है कि जब तक जीवित रहें (**अन्त तक**; आयत 14)। परमेश्वर के अनुग्रह के लिए दरवाज़ा केवल वहीं तक खुला है। हमें अपने हृदयों को कठोर या उदासीन होने से बचाने के लिए निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए। जंगल में जो कुछ इस्राएलियों के साथ हुआ वह होने

से हमें बचना आवश्यक है (देखें आयत 16)।

आयतें 16, 17. इब्रानियों का लेखक मसीही लोगों को बताना चाहता था कि अन्त तक विश्वासी बने रहे बिना कोई परमेश्वर के क्रोध से बचेगा नहीं। इसे साबित करने के लिए उसने उन्हें लोगों की बड़ी संख्या का स्मरण दिलाया जो **जंगल में पड़े रहे**।

इस्राएलियों के लिए उनके लिए वह सब करने के बावजूद परमेश्वर को **क्रोध** दिलाना कितना खतरनाक था! कितनों का नाश हुआ शायद एक अनुमान के अनुसार एक दिन में नब्बे लोगों का![16]

वह किन लोगों से क्रोधित रहा ...? हमेशा की तरह परमेश्वर उन से दुखी हुआ जो पाप करते हैं। जंगल में मरने वाले अबोध बालक नहीं थे; उन्हें तो प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश की अनुमति दी गई थी। बल्कि परमेश्वर का क्रोध शिकायत करने वालों और उन अनैतिक लोगों पर था **जिन्होंने पाप किया** और मारे गए (1 कुरिन्थियों 10:6–13)। उन्हें परमेश्वर की प्रेमपूर्वक अगुआई के बारे में जानने का हर अवसर था, परन्तु उन्होंने नहीं जाना। अपने आज्ञा न मानने के कारण उनके "शव" जंगल में पड़े रहे (गिनती 14:22–29)।

अपने स्वर्गीय पिता को दुखी करना या क्रोध दिलाना एक दुखद बात है जिसके लिए हमें महंगी कीमत चुकानी पड़ेगी। हम भी अपने पाप से पवित्र आत्मा को शोकित कर सकते हैं (देखें इफिसियों 4:30)। विश्वासहीन इस्राएली उन दस जासूसों की तरह उसी समय मारे जाने के योग्य थे (गिनती 14:36–38), परन्तु परमेश्वर ने जंगल में **चालीस वर्ष** तक उनमें से कइयों को स्वाभाविक मृत्यु मरने दिया। तुरन्त विनाश से मूसा की प्रार्थना ने रोका था (गिनती 14:13–19)। हमें इस्राएलियों की बड़ी भूल से सबक लेना होगा।

आयतें 18, 19. आयत 18 एक बार और भजन संहिता 95:11, बात करती है, जिसे 3:11 में उद्धृत किया गया था। व्यवस्थाविवरण 1:34, 35 में परमेश्वर ने शपथ खाई थी कि इस्राएली कनान में **प्रवेश करने न** पाएंगे। वही बात यानी विश्वास भरोसे के साथ विश्वास की कमी जिसने इस्राएलियों को कनान से बाहर रखा, हमें भी स्वर्ग से बाहर रख सकता है। मिस्र में से निकलते और जंगल में रहते समय इस्राएलियों ने जितने भी आश्चर्यकर्म और बड़े अनुभव देखे थे वे उन्हें यरदन नदी पार करने से पहले मृत्यु दण्ड पाने से रोक नहीं पाए। इसी प्रकार से जो कोई बड़ा "अनुभव" होने का दावा करता है उसके पास स्वर्ग का वास्तविक आश्वासन नहीं है जब तक वह प्रभु की आज्ञाओं को नहीं मानता।

इब्रानियों में बताई गई समस्या का कारण परमेश्वर और उसकी भलाई में भरोसे की उनकी कमी थी। भरोसे की कमी जीवन की हमारी अधिकतर वर्तमान समस्याओं का कारण है। "जब कोई व्यक्ति परमेश्वर में भरोसा खो देता है तो वह बिना किनारे वाले समुद्र पर है जो बवंडरों, चट्टानों, चोर–बालुओं से भरा है और जहां सुरक्षित लंगर डालने का स्थान ढूंढ़ पाना *असम्भव* है।"[17] हमारे आस पास के और लोग परेशान हो सकते हैं परन्तु हम दृढ़ विश्वास के साथ शांत रह सकते हैं।

प्राचीन इस्राएलियों की मूर्खता के कारण मूर्खतापूर्ण परमेश्वर की भलाई में भरोसे की कमी के कारण वे परमेश्वर के **विश्राम** में प्रवेश न कर सके (आयत 18)। उनके लिए इसका अर्थ कनान को कभी न देखना था। हमारे लिए यह प्रासंगिकता हमारे अन्तिम विश्राम स्वर्ग में प्रवेश

न कर पाने की चिंता है। हम परमेश्वर के वचन की पूर्ण सत्यता पर संदेह न करें। **अतः हम देखते हैं कि** (आयत 19) वाक्यांश का इस्तेमाल करने में स्पष्ट है कि लेखक ने मान लिया कि उसका तर्क अपने आप में स्पष्ट है।[18]

आयत 18 में **आज्ञा न मानी** शब्द आयत 19 के **अविश्वास के कारण** से मिलता है। नया नियम आम तौर पर आज्ञा मानने को विश्वास के साथ और आज्ञा न मानने को अविश्वास के साथ मिलाता है। यूहन्ना 3:36 "विश्वास करता है" को "नहीं मानता" का विपरीत शब्द बना देता है।[19] हम "उसके विश्राम" में पहुंचने के लिए आज्ञाकार होने और विश्वास से भरने की कोशिश करते रहें।

प्रासंगिकता

"स्वर्गीय बुलाहट" (3:1)

हमें हमारी बुलाहट सुसमाचार के द्वारा मिली और इससे हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा प्राप्त होती है (2 थिस्सलुनीकियों 2:13, 14)। मूसा को जलती हुई झाड़ी में से परमेश्वर की ओर से बुलाहट मिली थी (निर्गमन 3:1–6), परन्तु हम ऐसी बुलाहट की उम्मीद न करें। पवित्र शास्त्र के पूरा हो जाने के साथ आश्चर्यकर्म के द्वारा प्रकाशन दिए जाने का यह युग समाप्त हो गया। बाइबल पूरी तरह से हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है और प्रचार करने के कार्य के हर ढंग में "परमेश्वर के जन" को तैयार करती है (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

सुसमाचार के द्वारा ही हमें सुनने, ध्यान देने और आज्ञा मानने पर विश्वास के द्वारा उद्धार मिलता है (रोमियों 10:17)। "जिस बुलाहट से बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो" (इफिसियों 4:1)। जो व्यक्ति सुसमाचार के अनुरूप नहीं चल पाता वह "अयोग्य" ढंग से चल रहा है। सुसमाचार स्वर्ग में हमारे प्रभु की ओर से मिला और उस अर्थ में हमें "स्वर्गीय बुलाहट" मिली है। परन्तु आज किसी को भी आत्मा, पिता या यीशु की ओर से सीधे बुलाहट नहीं मिलती है। जितनी भी चेतावनियों और शिक्षाओं की हमें आवश्यकता है वह सब पवित्र शास्त्र में हैं और हमें उन्हें सुनना आवश्यक है। वचन की बात पर ध्यान न देने का अर्थ परमेश्वर की बुलाहट से कान फेर लेना है।

मरने तक विश्वासी (3:1)

मसीही लोगों के सताव के दिनों में रोमी सम्राज्य में उन्हें केवल *Kurios Kaisar* ("प्रभु कैसर") मान लेने पर छोड़ दिए जाने की पेशकश की जाती थी। एक काफ़िर पुरोहित गाड़ी के साथ चलते चलते कुछ लोगों को मृत्यु की ओर खींचते हुए कहता, "धूप की केवल एक चुटकी ले लो और कैसर को प्रभु मानकर उसकी भक्ति करने की शपथ ले लो तो तुम्हें छोड़ा जा सकता है।" अधिकतर लोगों का उत्तर होता था, "*Kurios Christos* ["प्रभु मसीह"]।" इस छोटी सी बात लगने के आगे हार मान लेने की परीक्षा बहुत बड़ी होती होगी। कोई तर्क दे सकता था, "मैं अपने मन में तो यही विश्वास करता हूं कि प्रभु यीशु ही केवल मेरा 'अगुआ' है चाहे मैं मुंह से कैसर को मान भी लूं।" इसके उलट बाहरी रूप में मान लेना और जो मन के अन्दर है

वह विश्वास के साथ या असली होने के अंगीकार के साथ साथ होगा।

यहूदी पवित्र लोगों को जिन्हें ''पवित्र भाइयो'' कहकर समझाया गया, के सामने यहूदी मत में लौट जाने के इतने ही बड़े दबाव थे। उन्हें ऐसे ही विकल्प दिए जाते होंगे। कम से कम उन्होंने इस बात को तो माना होगा कि उनके जीवन खतरे में हो सकते हैं। लेखक ने उन्हें याद दिलाया कि यीशु, ''महायाजक जिसे हम अंगीकार करते हैं'' जो कुछ था उसको मानने के लिए मर गया था। निश्चय ही इससे उन्हें उसके नमूने को, आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु तक मानते रहने के लिए प्रोत्साहन मिला होना चाहिए।

सच्चाई यह है कि यदि वे मसीह के वफ़ादार न रहते तो उन्होंने मृत्य का दुख पाने के उससे भी बड़े खतरे में होना था! यीशु ने जल्द होने वाली घटनाओं की भविष्यद्वाणी की थी। मत्ती 24, मरकुस 13, लूका 21 के चिह्न 66ईस्वी में विद्रोह आरम्भ होने क बाद यरूशलेम के निकट रोमी सेना के पहुंचने पर आरम्भ हो गए थे। श्रद्धालु यहूदी यह सोचकर कि यरूशलेम में सेना का थोड़ी देर का जमावड़ा परमेश्वर के उन्हें छुटकारा दिलाने का प्रतीक है, नगर में या नगर के आस पास रहे। विश्वासी मसीही लोगों को पता था कि बात इसके उलट है। यीशु ने कहा था कि ''चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएंगे'' (मत्ती 24:22)। रोमी आक्रमण के रुक जाने से उन्हें नगर के विनाश होने से पहले भाग जाने का अवसर मिल गया। अवसर आते जाते रहते हैं।

यदि हम प्रभु के आने के समय अविश्वासी जाए गए तो झुण्ड में प्रवेश करने और छुड़ाए हुओं के साथ महिमा में लिए जाने में बहुत देर हो चुकी होगी। मसीही लोगों को जो यरूशलेम से भागे थे यह याद दिलाना आवश्यक था कि पुराने प्रबन्ध में जो भी सुन्दरता थी उसका श्रेय मसीह को दिया जाना चाहिए, न कि मूसा को।

''अपने नियुक्त करने वाले'' (3:2)

''नियुक्त'' के लिए शब्द (*poieō*) का अर्थ ''बनाना'' हो सकता है। चौथी शताब्दी के सम्प्रदाय एरियनों ने यह दावा करते हुए कि ''यीशु'' ''बनाया'' या ''रचा'' गया था अनन्तकाल से पिता के साथ उसका अस्तित्व नहीं था, इस शब्द को लेकर इसका अनुवाद ''बनाया'' कर दिया। यह अधिक मूल अनुवाद लगता है। प्राचीन टीकाकारों ने इस कथन को मसीह के मानवीय पहलू और उसके अनन्त परमेश्वर होने के लिए लागू किया (देखें यूहन्ना 1:1-3)। यीशु ने सब वस्तुओं की सृष्टि में योगदान दिया (यूहन्ना 1:3) इस कारण स्पष्टतया वह स्वयं रचा गया नहीं था। यह सोलहवीं सदी के दार्शनिक सोसिनियुस की शिक्षा का खण्डन करता है, जिसने यीशु के पूर्ण परमेश्वर होने का इनकार किया था। यह एरियन शिक्षा के भी विपरीत है कि यीशु को रचा गया था और वह पिता के हमेशा अधीन था।

बेशक मसीह के लिए देह ''तैयार की गई'' नहीं तो वह हमारे पापों के लिए मर नहीं सकता था (इब्रानियों 10:5)। ईश्वरीय पुत्र यदि मृत्यु के अधीन रूप में पृथ्वी पर न आता तो वह मारे लिए मर नहीं सकता था। इसके कारण वह हमारी हर पीड़ा और दुख को अनुभव कर सका ताकि हमें पता चल सके कि वह हमारे साथ सहभागी है (2:14)। ''हम भी उसकी पवित्रता के भागी'' हैं (12:10)।

''हर घर का कोई न कोई बनाने वाला होता है'' (3:4)

''हर घर का कोई न कोई बनाने वाला होता है'' कथन में पहले कारण का नियम मिलता है। जो व्यक्ति इस शिक्षा को मान लेता है कि मनुष्य केवल संयोग से बना था उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। गणितिज्ञों के हिसाब किताब यह दिखाते हैं कि किसी भी जीवित तत्व का संयोग से अस्तित्व होना असम्भव है। इसलिए किसी ''बनाने वाले'' ने हमें बनाया और संसार को बनाया। कॉरनल यूनिवर्सिटी के खगोलज्ञ कार्ल सेगन का मानना था कि कायनात के आगे कुछ नहीं है यानी दिखाई देने वाले संसार में परमेश्वर का कोई प्रमाण नहीं है। बहुत से विकासवादियों की तरह यह सोचते हुए कि मनुष्य सब जीवों से समझदार और बुद्धिमान हैं, वह भी एक मानवतावादी था। उसके विश्वास वाले दूसरे लोग यह कल्पना करते हैं कि हमारे सौर्य प्रबन्ध के बाहर के जीवों में अधिक समझ हो सकती है। कितना अजीब है! सेगन को अपने बारे में संसार के डिज़ाइन और अपनी मानवीय देह में ही परमेश्वर मिल सकता था यदि उसने मनुष्य के भीतर की उन जटिलताओं को ही देख लिया होता जो संयोग से नहीं हो सकती थी। सृष्टिकर्त्ता में विश्वास के लिए प्रमाण उसके आस पास था।

''यदि हम ... दृढ़ता से स्थिर रहें'' (3:6)

यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के अनुग्रह से गिर जाए तो क्या यह इस बात को साबित करता है कि उसका उद्धार कभी नहीं हुआ था? यह कहना कि अनुग्रह से गिरने वाला व्यक्ति मसीह में वास्तव में कभी आया ही नहीं था कि उसके साथ आरम्भ करे और उसके पास उद्धार का कोई अवसर नहीं था, के लिए कुछ विशेष निष्कर्षों की आवश्यकता है: पहली बार कि जो कभी ''संसार की गंदगियों से बचा'' न हो, जैसा कि पतरस ने सुझाव दिया *फिर से* हंसकर ''जीत नहीं सकता'' (2 पतरस 2:20-22)। ''दोबारा'' गिरना नहीं है क्योंकि वह उन बुराइयों से कभी बचा ही नहीं। 3:12 में ''दूर हटा'' की बात इस्तेमाल के लिए बेमतलब हो जाती है। ऐसा व्यक्ति केवल संसार के पाप के प्रदूषण से बचा ''लगना'' था और गिरा ''लगना'' था, परन्तु पतरस ने कहा ''बच गया''! अनिश्चित उद्धार से कोई शांति नहीं मिलनी थी।

''संतों के बने रहने'' (''एक बार उद्धार हो गया, तो सदा के लिए उद्धार हो गया'') की शिक्षा आयत 6 सशर्त वाक्य को अनावश्यक बना देती है। बेशक कुछ लोग उत्तर देते हैं, ''हमारे नये जन्म का अनुभव हमारे उद्धार का प्रमाण है।'' मैं अक्सर अपने छात्रों से कहता हूं, ''यदि आपको लगता है कि आप उद्धार के प्रति सुनिश्चित हैं तो आपके पास पक्का प्रमाण है कि आपकी भावना है! आपके पास केवल यही है!'' हम अब अपने उद्धार के प्रति आश्वासत हो सकते हैं परन्तु हमें आत्मिक सिद्धता में बढ़ते रहना चाहिए (2 पतरस 1:5-11)। अनन्त जीवन की पूर्ण वास्तविकता हमें केवल तभी मितली है ''यदि हम साहस पर अपनी आशा के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें'' (आयत 6)। इस बीच हमें ''अनन्त जीवन की आशा'' है (तीतुस 1:2)। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में हमारा विश्वास हमें आने वाले जीवन का आश्वासन देता है। लेखक को इसी आशा का भय था कि उसके पाठक इसे ठुकरा देंगे (10:23; 6:11)। हमें ''अन्त तक'' आशा के पूरे आश्वासन को पाने के लिए लगे रहना आवश्यक है।

जहां तक इस अवधारणा की बात है कि ''यदि हम गिर गए, तो यह इस बात का प्रमाण है

कि हम वास्तव में कभी बदले ही नहीं थे,'' यूहन्ना 15:1-6 दिखाता है कि यीशु को ऐसी किसी शिक्षा की जानकारी नहीं थी। वे आयतें ''दाखलता में'' होने वाले के फल न देने के कारण और काटे जाने के कारण आग में झोंके जाने की बात करती है। दाखलता में होने का रूपक किसी काम का नहीं है यदि व्यक्ति मसीह में नहीं है, यानी वह असल में बदला नहीं है और सचमुच में मसीही नहीं है। इसी प्रकार मसीही व्यक्ति जो नहीं देता है, खो सकता है। ''विश्वासत्याग (बेदीनी) का असम्भव होना'' को मानने वाले यह दावा करें, ''वह केवल लगता था कि दाखलता में है,'' जो कि यूहन्ना की आयतों में नहीं कहा गया।

कुछ लोग परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर बहुत ज़ोर देते हैं और मनुष्य की असफलताओं की अनदेखी करते हैं कि वे ऐसे बात करते हैं जैसे कोई शर्त ही न हो। दूसरे छोर वाला मनुष्य की कमज़ोरी के यहां तक होने तक ज़ोर देता है कि वे मसीही लोगों को बचाए रखने की किसी भी ईश्वरीय शक्ति का लगभग इनकार ही करते हैं। पतरस ने समझाया कि हमारी ''रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिए, आने वाले समय में प्रकट होने वाली है, की जाती है'' (1 पतरस 1:5)। उस विश्वास को बरकरार रखे बिना हम अब भी अनन्त जीवन पर अपनी पकड़ को खो देते हैं। हम मसीह में सुरक्षित तभी हैं यदि भरोसा करने वाले, आज्ञा मानने वाले विश्वासी बने रहें। यूहन्ना 5:24 जैसी आयतें, जो हमें बताती हैं कि हमें अनन्त जीवन, मिला है ''विश्वास करने'' के लिए इन यूनानी काल का इस्तेमाल करती हैं जो वर्तमान, निरन्तर क्रिया का संकेत देता है। जब तक हमारा विश्वास बना रहता है तब तक हम सुरक्षित रहते हैं। जिन्हें उद्धारकर्त्ता के हाथ से छीना नहीं जा सकता, वे, वे भेड़ें हैं जो उसके ''पीछे'' चलती हैं (क्रियाशील संकेत भी देता है; यूहन्ना 10:27, 28)। हमें आत्मिक रूप में बढ़ना और 2 पतरस 1:5-11 वाले ''मसीही अनुग्रहों'' को जोड़ना आवश्यक है। ताकि हम ''ठोकर'' न खाएं! वचन के विश्वासयोग्य सेवकों के रूप में हमें परमेश्वर की ईश्वरीय सहायता के साथ साथ विश्वास में बने रहने की मनुष्य की ज़िम्मेदारी की शिक्षा देना भी आवश्यक है।

''एक बार उद्धार हो गया, तो हम कभी गिर नहीं सकते'' की शिक्षा देने वाले लोग पवित्र शास्त्र की स्पष्ट बातों को ठुकराने लगते हैं। उदाहरण के लिए गलातियों 5:4 कहता है कि कुछ लोग ''अनुग्रह से गिर गए'' थे। जहां भी कोई डॉक्ट्रिन बाइबल की किसी आयत का स्पष्ट उल्लंघन करती है, वह सही नहीं हो सकती! फिलिप एजकुंब ह्यूजस ने लिखा है, ''परन्तु इसका अर्थ यह है कि जिसके विश्वास का अंगीकार उसके जीवन के गुण से उलट है उसे यह देखने के लिए कि वह मसीही है भी या नहीं अपने आपको परखना चाहिए [2 कुरिन्थियों 13:5]।''[20] उसके कहने का अर्थ था कि यह देखने के लिए कि वह इस समय विश्वास में हैं या नहीं अपने आपको परखें। पौलुस ने कुरिन्थुस के ''पवित्र लोग'' को जो उसके लिखने के समय विश्वास में थे (1 कुरिन्थियों 1:2; 2 कुरिन्थियों 1:1)। उसके कहने का अर्थ यह नहीं हो सकता था कि यह भाई कभी विश्वास में आए ही नहीं थे। क्या उसे ''पवित्र लोग'' का पवित्र शीर्षक देते हुए उसे किसी के बारे में या सब के बारे में गलती लगी थी? यदि वे गिर नहीं सकते थे, तो उस ने उन्हें यह आज्ञा क्यों दी, ''अपने आपको परखो कि विश्वास में हो कि नहीं; अपने आपको जांचो ...'' (2 कुरिन्थियों 13:5)? उन्हें चेतावनी क्यों दी गई, ''इसलिए जो समझता है मैं स्थिर हूं, वह चौकस रहे कि गिर न पड़े'' (1 कुरिन्थियों 10:12)?

आत्मा आज कैसे बात करता है (3:7-11)

हम साफ़ देखते हैं कि आत्मा अपने ही वचन के द्वारा काम करता है। "पवित्र आत्मा कहता है" (आयत 7) का वर्तमान काल इस बात का पता देता है कि वह आज भी अपने वचन के द्वारा बात करता है। वर्तमान काल में "आज" से जुड़ी ताड़ना में ज़ोर को जोड़ा जा सकता है।

आम तौर पर ऐसा होता है कि कोई सुसमाचार को सुनता है और उससे बहुत प्रभावित होता है, पर फिर भी उसे मानने से इनकार कर देता है। उसके लिए जीवन के अगले वर्षों में सुसमाचार को ग्रहण करना और भी कठिन हो जाता है। ढीठ होकर मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के दिए जाने को ठुकराने वाला व्यक्ति हो सकता है कि इस जीवन भी एक दिन ऐसी स्थिति में पहुंच जाए जहां से लौट न सकता हो (इब्रानियों 10:26)। "यह आग्रह कि अपने मन को कठोर न करो" (आयत 8)। हम सुसमाचार की चेतावनियों को ठुकराकर अपने मनों को कठोर करते हैं। कुछ लोग जानबूझकर परमेश्वर के वचन का समाना करने और पाप में जीवन बिताते रहने के लिए जानबूझकर अपने मनों को कठोर करते हो सकते हैं।

यहां उद्धृत भजन संहिता 95 की प्रेरणा लिखे जाने के समय दी गई थी और अपने अविश्वासी पूर्वजों की तरह न रहने की कठोर चेतावनी के रूप में इब्रानियों को दिए जाने के समय भी इसकी प्रेरणा दी गई थी। नया नियम इस बात का पता देता है कि आत्मा आज भी वचन के द्वारा बात करता और काम करता है। जब कोई पवित्र शास्त्र में लिखे गए आत्मा के संदेश को ध्यान से सुनता है तो परमेश्वर के संदेश को समझने के लिए हर आवश्यक सहायता उसे मिल जाती है। यहूदी अगुओं ने स्तिफनुस के प्रवचन को ठुकराकर पवित्र आत्मा का सामना किया था (प्रेरितों 7:51)। प्रकाशितवाक्य 2 और 3 ने पाठकों को "आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है, को सुनने" का आदेश दिया। जितना सच यह उस समय था उतना ही आज है कि हमें जो कुछ लिखा गया है उस पर ध्यान दें (प्रकाशितवाक्य 2:7, 11, 17, 29; 3:6, 13, 22)। पवित्र आत्मा की अगुआई से दिए गए निर्देश कलीसिया की हर पीढ़ी के लिए आवश्यक हैं। हर मण्डली को दिया गया संदेश प्रकाशितवाक्य के साथ पत्रों को आज पढ़ने वालों के साथ साथ उस समय की सभी कलीसियाओं के लाभ के लिए था।

पवित्र आत्मा अपने प्रकट किए और लिखित वचन में बात करता है जिसे हमें आज भी सुन, समझ और मान सकते हैं। यदि हम सच्चाई को जानने के इच्छुक हैं तो हमें ऐसा करने के लिए किसी विशेष सहायता की आवश्यकता नहीं है। यदि हम समझदार बनना चाहते हैं तो हमें प्रभु की इच्छा की समझ मिल जाएगी (इफिसियों 5:17); यह समझने की आज्ञा है! इस आज्ञा को कि "अपने मन को कठोर न करो" (आयत 8), आम तौर पर तोड़ा जाता है। लोग कहते हैं, "हम बाइबल को समझ नहीं सकते!" नहीं, वे जैसा यह कहती है वैसा नहीं करना चाहते। जिस कारण वे इसके अर्थ को समझने की कोशिश नहीं करते। जो वे समझते हैं, उसे भी वे करना नहीं चाहते! अज्ञानता, अज्ञानता को जन्म देती है। जब हम सुनने से इनकार कर देते हैं तो धीरे धीरे हम कठोर होने लगते हैं और अन्त में ऐसी स्थिति में पहुंच जाते हैं कि सुनने के लिए बहुत देर हो चुकी होती है। फिर बाइबल के बाहर के कूड़े ने सच्चाई की ताज़ा गंध को मार दिया है।

''यदि आज तुम उसका शब्द सुनो'' (3:7-11)

इब्रानियों 3 में ''आज'' पर दिया जाने वाले ज़ोर का हमारे प्रचार में बहुत प्रभाव होना चाहिए। परमेश्वर ने कभी यह आज्ञा नहीं दी, ''मेरी इच्छा पूरी करने के लिए कल तक रुको।'' इसके बाद आज काम करने के कारणों की एक सूची है: (1) बहुत से लोगों ने पहले ही काफ़ी देर तक प्रतीक्षा की है। (2) हो सकता है कि कल कभी न आए। (3) समय के बीतने के साथ मन फिराना और आज्ञा पालन कठिन होता जाता है। (4) परमेश्वर ने अब आज्ञा पालन की आज्ञा दी है (2 कुरिन्थियों 6:2)। (5) आज्ञा मानने की कोई भी लालसा समय के साथ कम हो जाएगी। (6) बाद में किया गया आज्ञापालन हो सकता है इतना लाभदायक न हो। (7) आज्ञा मानने के लिए अब से बेहतर समय कभी नहीं होगा।[21]

अविश्वास वाला बुरा मन (3:12, 13)

बुरा मन अविश्वास से बनता है न कि जैसा कि कुछ लोगों का कहना है कि ''पापी स्वभाव'' से। किसी को अपने आपको इस कारण समझार नहीं मानना चाहिए कि वह परमेश्वर के अस्तित्व के प्रमाण को ठुकराता है। ऐसा वह इसलिए करता है क्योंकि उसका मन ''बुरा'' है और यदि वह अपने मन को परमेश्वर की ओर न मोड़े तो इससे भी बुरा होता जाता है। उदाहरण के लिए जब कोई व्यक्ति अश्लील तस्वीरों को देखने में समय बिताता है तो उसकी बुरी इच्छाएं बढ़ती रहती हैं। व्यक्ति का मन स्वाभाविक रूप में पाप से कठोर होता रहता है। गिरने की प्रक्रिया को इस प्रकार से बताया गया है:

> आयतें 12 और 13 उस प्रक्रिया का जो व्यक्ति के अन्दर कहीं होती है जब परस्पर समझाने की निरन्तर मज़बूती नहीं होती-वह प्रक्रिया जो आरम्भ में किसी भी देखने वाले के लिए दृश्य होती है। पहले अविश्वास के बीज को फूटने दिया जाता है, फिर बुराई और परमेश्वर की उपेक्षा करने वाले विचार फैलने लगते हैं। धीरे धीरे यह पूरे व्यवहार पर काबू पा लेते हैं, जब तक कि पूरा चरित्र बदल नहीं जाता। ... परमेश्वर को उसका मुख्य उत्तर होता है **नहीं**। अब अधीनता का **हां** नहीं रहा जो उसने बपतिस्मे के समय माना था।[22]

परिणाम ''दूर'' चले जाना (*aphistēmi*) होता है जिसका अर्थ जीवित परमेश्वर से दूर जाने के लिए जानबूझकर किया गया इरादा है। यह विश्वासत्याग (बेदीनी) का एक कार्य है जिसमें उससे जिसे व्यक्ति ने किसी समय पकड़ा था दूर हटने का व्यक्तिगत कार्य शांमिल है। यह वापस न आने के इरादे से परमेश्वर और मसीह के विरुद्ध विद्रोह है।

दूर जाने के खतरे वाले लोगों को साथी मसीही लोगों द्वारा प्रतिदिन प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है (आयत 13) कलीसिया में आज यह पहले से कहीं अधिक आवश्यक है। संसार के प्रलोभन मनों को भ्रमित करते हैं और हृदयों को कठोर कर देते हैं जब तक किसी समय समर्पित रहे लोगों को यह नहीं लगता कि अब उन्हें कलीसिया या मसीह की आवश्यकता नहीं है। इससे प्रभावित लोग अब साफ़ साफ़ देख नहीं सकते, क्योंकि यह प्राण की देखने वाली नस कट जाने जैसा है।[23] हमें लग सकता है कि हमें संगति से प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु मन इसे चाहता है।

हर दिन समझाते रहना (3:13)

जो व्यक्ति स्थानीय मण्डली से सम्बन्धों के बिना अकेला मसीही बनना चाहता है, इब्रानियों की पुस्तक में उसके विचार के लिए कोई समर्थन नहीं है। देह के साथी अंगों की ओर से मिलने वाला प्रोत्साहन किसी भी और सहायता से बढ़कर है। हम जो संतों के साथ लगातार आराधना करते हैं, हो सकता है कि हम भी अपने जीवनों पर दूसरों के प्रभाव को समझ न सकें। अकेला कौन खड़ा रह सकता है ? यीशु को "*सामूहिक* आराधना" के महत्व का पता था और उसने इसे देने के लिए कलीसिया को ठहरा दिया। मित्रों और साथी मसीही लोगों द्वारा लगातार और निरन्तर समझाते रहने के बिना हम "पाप के धोखे से कठोर" हो सकते हैं।

"समझाते" के लिए शब्द *parakaleō* में बड़ी दिलेरी का संदेश है। यह उस उपदेश का बयान है, जो टुकड़ियों में उत्साह भरने के समय यूनानी सैनिक सेनापति द्वारा दिया जाता था। इस प्रकार से जोश में आने के बाद सिपाही और वीरता से लड़ते थे।

कलीसिया के लोग कितनी बार अपने किसी साथी सदस्य को बिना ताड़ना या समझाने के दूर जाते देखते हैं![24] हमें प्रतिदिन अपने भाइयों और बहनों को समझाते रहना आवश्यक है। परमेश्वर के साथ हम आरम्भ से ही अन्त को देख सकते हैं; हमारी वर्तमान की परीक्षाएं उस महिमा के सामने, जो हमें मिलेंगी बहुत छोटी हैं (2 कुरिन्थियों 4:16–18)। वह उनके लिए जो उससे प्रेम करते हैं "सब बातों को मिलाकर भलाई उत्पन्न करवाता है" (रोमियों 8:28)। इन बातों को ध्यान में रखना प्रतिदिन के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है। हमें बार बार उन्हें याद नहीं दिलाया जा सकता। जब कोई परिवार इकट्ठे आराधना करता है तो इसके टूटने के आसार बहुत कम हैं। जब कोई पिता अपने परिवार को आराधना में कलीसिया के साथ इकट्ठा होने के लिए ले जाता है तो बच्चों को अपराधियों की तरह अदालत में ले जाए जाने की सम्भावना बहुत कम होती है।

संसार में सबसे बड़ी संगति के साथ परमेश्वर के वचन पर मनन जीवन के बोझों को विश्वास से उठा लेता है। पहली सदी के यहूदी मसीही चेले को अब्राहम में अपने भाइयों में निकाला या उसका बहिष्कार करके धमकाया जा सकता होगा परन्तु उसके पहले विश्वास की जगह जो उसे अब मिला वह कहीं अधिक कीमती है।

मसीह के भागीदार (3:14)

"मसीह के भागीदार" होना मसीह की आशीष है! आयत 14 वाले वाक्यांश का अनुवाद "मसीह के साथ" हो या "मसीह में" या "मसीह के" इसका कोई महत्व नहीं है क्योंकि हर शब्द में यही बताया गया है कि अनन्त महिमा में सहभागी हम केवल यीशु के साथ ही होते हैं। यह आयत हमारे प्रभु मसीह के साथ आत्मिक एकता का सुझाव देती है। जब तक कुछ लोग डॉक्ट्रिन के मुद्दों को नज़रअन्दाज़ करते हैं या एक प्रश्न को "मुख्य मुद्दा" जबकि दूसरी बातों को "गौण" या महत्वहीन बनाने का प्रयास करते हैं, तब तक हम "मसीह के भागीदारों" के रूप में एक नहीं हो सकते। ऐसी सोच मुख्यतया अपने आप तक है और इसका परिणाम जो किसी को पसन्द होता है उसे चुन लेना और जो परमेश्वर ने मांग की हो, उस पर विचार से सही नहीं है, उसे छोड़ देना होता है।

वास्तविक एकता के लिए हमें पहले मसीह में उसके अपने ठहराए हुए तरीके से अर्थात आज्ञाकारी विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा आना आवश्यक है (गलातियों 3:26, 27)। यदि हम विश्वास की इस बुनियादी बात को मान लेते हैं और इसे पकड़े रहते हैं तो हम अपने उद्धारकर्त्ता और मसीह में अपने भाइयों और बहनों के साथ पूरी एकता के रास्ते पर सही चल रहे हैं। यूहन्ना ने ज़ोर दिया कि जब हम ज्योति में चलते हैं तो हमें दूसरों के साथ "सहभागिता" भी रखनी आवश्यक है। तभी यीशु का लहू लगातार हमें हमारे सब पापों से शुद्ध करता है (1 यूहन्ना 1:7)। क्या शुद्ध किए जाने के साथ सहभागिता बनी नहीं रहती? हम अपनी सहभागिता को चलाते हैं परन्तु परमेश्वर अपनी देह की सदस्यता को चलाता है। उसे हमारी सलाह की आवश्यकता नहीं है।

हमें अपनी पसन्द की आज्ञाओं को चुनने, दूसरों पर दोष लगाने और परमेश्वर को परामर्श देने की अपनी मानवीय प्रवृत्तियों को निकालना आवश्यक है। हमारा पक्का भरोसा मसीह पर और उसकी सच्चाई पर होना चाहिए और हमें अन्त तक उसमें "दृढ़ता से स्थिर" रहना चाहिए (आयत 14)।

हम परमेश्वर को क्रोध दिला सकते हैं (3:16, 17)

"क्रोध दिलाना" (*parapikrainō*) शब्द का अर्थ है "कड़वी भावनाएं भड़काना" या "भड़काना।" हां हम अन्त में प्रभु की दया को खत्म करके अपने धीरजवान परमेश्वर को भड़का देंगे यदि हम उसके वचन से दूर होकर अपने मनों को कठोर होने देंगे। जब किसी ने इब्रानियों 6:4-6 में गिनवाई सभी आशिषें पा ली हों और वह गिर जाए तो वह परमेश्वर के क्रोध का हक्कदार है। इस्राएलियों ने जब जंगल में पाप किया था तो वे गिर गए और उनकी लाशें सूर्य की गर्मी में गल गईं थीं। परमेश्वर चालीस वर्ष तक उन से नाराज़ रहा था और उसका क्रोध बिल्कुल सही था। उसने उन्हें मिस्र में से "उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर" निकाला था (निर्गमन 19:4)। उनके लिए वह पिता की तरह था जिसने उन्हें रोटी के लिए मन्ना, मांस के लिए बटेर, चट्टान से पानी और उसमें बड़े विश्वास करने वाले की अगुआई दी। परमेश्वर ऐसे लोगों द्वारा उसे ठुकरा देने पर परमेश्वर उन से नाराज़ क्यों नहीं होगा? वह सचमुच चालीस वर्ष नाराज़ रहा! यदि हम देखते हैं कि हम परमेश्वर को क्रोध दिला रहे हैं तो आइए हम अपने आपको परखें और जल्दी से बदल लें।

आज्ञा न मानने वालों का अविश्वास (3:18, 19)

आज्ञा में बने न रहने वालों ने परमेश्वर के क्रोध को पाया। इस्राएलियों ने अपनी यात्रा का आरम्भ जोश के साथ किया था परन्तु बाद बार वही खाने को मिलने के कारण वे मिस्रियों द्वारा उन पर लाई जाने वाली भयंकर बुराई की फूट और इसके विपरीत यह सोचने लगे कि कालांतर में उनके पेट कैसे भरते थे (गिनती 11:5)। परमेश्वर के लोगों को अपनी पहले वाली गुलामी से घृणा करने के बजाय लहसुन जैसी विलासिताओं की याद आ रही थी।

हम अपने पापों में इतना बेपरवाह हो सकते हैं कि हम बदलाव का सामना न करना चाहें। शायद हमारे आस पा सके लोग हमारे लिए मन फिराने की प्रभु की आज्ञा को मानना कठिन बना देते हैं। आज्ञा तोड़ने के लिए जो भी कोई उकसाता है उस पर जय पाना आवश्यक है नहीं तो

परमेश्वर का क्रोध हम पर पड़ेगा।

इब्रानियों की पुस्तक में मुख्य विचार आज्ञापालन का है। याद करें कि अन्तिम दिन का क्रोध उन लोगों के ऊपर पड़ेगा जिन्होंने ''सुसमाचार को नहीं माना'' है (2 थिस्सलुनीकियों 1:7–9)। सुसमाचार की पेशकश केवल आज्ञा मानने वालों के लिए है (इब्रानियों 5:8, 9)। इब्रानियों की पुस्तक में अविश्वास और आज्ञा न मानने को बराबर बताया गया है, जैसे आयतें 18 और 19 में दिखाया गया है, बिल्कुल जैसे यूहन्ना 3:36 में है नये नियम में विश्वास और आज्ञापालन आम तौर पर एक दूसरे के पूरक विचार हैं। उद्धार के लिए विश्वास योग्यता आवश्यक है! ''बिना शर्त अनन्त सुरक्षा'' का विचार ही बाइबल की धारणा से बाहर है।

टिप्पणियां

[1]मूसा और यीशु के बीच समानताओं और विभिन्नताओं की एक लम्बी सूची जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन हिब्रू* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1971), 67–69 में दी गई है। [2]बाद की कुछ हस्तलिपियों में 1 थिस्सलुनीकियों 5:27 में ''पवित्र भाइयो'' है। KJV और NKJV में यह है, परन्तु ASV, NASB, NIV और RSV से ''पवित्र'' को निकाल दिया गया है क्योंकि बेहतर हस्तलिपियों में यह नहीं है। [3]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक–इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 122. [4]फिलिप एजकुम्ब ह्यूजस, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 127. [5]जेम्स थॉम्पसन, *द लैटर टू द हिब्रूज़,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1971), 49. [6]''सेवक'' के लिए विशेष यूनानी शब्द का इस्तेमाल नये नियम में केवल यहीं पर हुआ है, परन्तु LXX में यह कई बार मिलता है। [7]ब्रूक फॉस वेस्टकॉट, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़: द ग्रीक टैक्स्ट विद नोट्स एंड ऐसेस* (लंदन: मैक्मिलन एंड कं., 1889; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1973), 78. [8]ह्यूजस, 139. [9]थॉम्पसन 54. [10]थॉमस हेविट, *द एस्टिल टू द हिब्रूज़: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 82.

[11]रेमंड ब्राउन, *द मैसेज ऑफ़ हिब्रूज़: क्राइस्ट अबव ऑल,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर–वर्सिटी प्रैस, 1982), 84. [12]थॉम्पसन, 55. [13]डोनल्ड गुथरी, *द लैटर टू द हिब्रूज़: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1983), 109. [14]थॉम्पसन, 55–56. [15]मैरिल सी. टैनी, *न्यू टैस्टामैंट सर्वे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1961), 361. [16]साइमन जे. किस्टमेकर, *एक्सपोजिशन ऑफ़ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1984), 97. [17]ऐल्बर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामैंट: हिब्रूज़ टू ज्यूड* (लंदन: ब्लैकी एंड सन, 1884–85; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1985), 90. [18]गुथरी, 110. [19]वाक्यरचना NASB, ASV, ISV, और NRSV से मिलती जुलती है। NIV में ''विश्वास करता'' और ''ठुकराता'' है। [20]ह्यूजस, 139.

[21]कॉफ़मैन, 70. [22]*द न्यू इंटरनैशनल बाइबल कमैंट्री,* संपा. एफ़. एफ़. ब्रूस, एच. एल. एलिसन एंड जी. सी. डी. हॉवले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1986), 1511–12 में गेरल्ड एफ. हाअथॉर्न, ''हिब्रूज़''; हाअथॉर्न की टिप्पणी जोहन्नेस स्नाइडर, *द लैटर टू द हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1957), 31–32 पर आधारित था। [23]गरेथ एल. रीस, *ए क्रिटिकल एंड एक्सेजेटिकल कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (मोबर्ले, मिज़ोरी: स्क्रिप्चर एक्सपोज़िशन बुक्स, 1992), 49.
[24]बार्नस, 85.